01. दादी जी के महावाक्य

हरेक अपने से पूछें कि हम बाबा के पास किस लिए आये हैं? हम सब यहाँ आये हैं योग कमाने। योग ही हमारी पढ़ाई का सार है जिसको बाबा कहते हैं मन्मनाभव। गीता के भी आदि और अंतिम यही महावाक्य हैं। तो हमें प्रतिदिन यह चैक करना है कि मेरा घाटा और फ़ायदा कहाँ तक है? कितना हमने योगबल जमा किया? रोज़ अपने से पूछो कि मैं यहाँ किस लिए बैठा हूँ? बरोबर मेरी यह कमाई हो रही है? वह शक्ति बढ़ती जा रही है या घटती जा रही है? योगी के लिए फर्स्ट है प्युरिटी। प्युरिटी की सब्जेक्ट में कितनी मार्क्स हमने जमा की है? चैक करना है कि योग के बीच कोई विघ्न तो नहीं आता है?

जैसे बाबा ने कहा तुम बच्चे यहाँ आये हो अपनी झोली भरने लेकिन देखना झोली में छेद तो नहीं है? लीक तो नहीं होती? अगर प्युरिटी की वृत्ति सूक्ष्म कम्पलीट होगी तो लीक हो नहीं सकती। इसके लिए सदैव भाई–भाई की स्नेह की वृत्ति चाहिए। अगर हम कहते हैं कि हम प्यार के सागर के बच्चे हैं तो अपने से पूछो कि हम कहाँ तक प्रेम स्वरूप बने हैं? हम आत्मा स्नेह स्वरूप हैं। अगर स्नेह की सब्जेक्ट में ज़रा–सी लीकेज़ होगी तो बाप स्नेह की लाईन टूट जायेगी। स्नेह की लाईन आपस में भी टूटी तो अन्दर वह ठक–ठक करती रहेगी। फिर योग की वा स्नेह स्वरूप की अनुभूति हो नहीं सकती।

इस बार बाबा का यही एक मीठा बोल था कि बच्चे, तुम्हें हर प्रकार से रिटर्न देना है और रिटर्न जर्नी पर चलना है। बाबा ने जो दिया हैः ज्ञान, प्रेम, शक्तियाँ, उन सबका रिटर्न दो और रिटर्न अर्थात् वापस चलने की तैयारी करो। इसके लिए मुख्य है समेटने की शक्ति। अब इस शक्ति की परसेन्टेज को बढ़ाओ। देखना है कि हम घर जाने के लिए कम्पलटी रेडी हैं? बाबा ने जो ऋण दिया है वह रिटर्न कर रहे हैं तथा जाने की तैयारी कर रहे हैं? यही चार्ट चैक करो।

हम यहाँ आये हैं योग कमाने। योग का चार्ट बढ़ाते–बढ़ाते हमें कर्मातीत बनना है। तो अपने से पूछोः कर्मातीत बनने के लिए हमारे सारे हिसाब चुक्तू हो गये हैं? कोई भी पंछी किसी भी घड़ी उड़ सकता है। इस श्वास का कोई भरोसा नहीं। इसलिए हमेशा अपना खाता कम्पलीट कर रखना है।

बाबा हम बच्चों के तक़दीर की जितनी महिमा करता, उतना हमें भी दिन–रात यही योग कमाने की फ़िकर रहती है या अलबेले रहते हैं? अगर योग का अनुभव होगा तो अतीन्द्रिय सुख में मस्त रहेंगे। कर्म तो करना ही है। लौकिक में भी कर्म करते हैं और अलौकिक में भी कर्म करते हैं परन्तु अन्तर क्या है? कर्म में रहते मेरे योग का पोतामेल क्या है, चैक करना है। हम यहाँ कर्म के लिए ही नहीं बैठे हैं। हम बाबा के बने हैं भविष्य 21 जन्मों की प्रालब्ध जमा करने, योग का चार्ट बढ़ाने। अगर हमारे योग का चार्ट ठीक है तो हम अपने पुरुषार्थ से सदा संतुष्ट रहेंगे। नहीं तो कहेंगे चल तो रहे हैं, निभा तो रहे हैं...। उस मस्ती से नहीं बोलेंगे। तो खुद से पूछना है कि मेरी चढ़ती कला कहाँ तक है? उसमें कोई लीकेज़ तो नहीं है? अच्छा। ओम् शांति।

02. दादी जी के महावाक्य

ज्ञान का अर्थ ही है पुराने संस्कारों को बदलना। हम संस्कारों को ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं जहाँ परखने की बात है वह तो सहज है। यूँ तो अपने संस्करों को जान सकते हैं परन्तु फिर भी समझो नहीं पता पड़ता तो जैसे किसके गुण वर्णन करते हैं कि फलाने में यह–यह गुण हैं तो देखना है कि मेरे में वे गुण हैं? इसको कह जाता है अपने को परखना। अगर मैंने अपने संस्कार को जान लिया तो फिर उसको ज्ञान से परिवर्तन करना है। परिवर्तन किया तो उसको कहा जायेगा रियलाइज़ किया। अगर परिवर्तन नहीं किया तो कहेंगे पूर्ण रूप से रियलाइज़ नहीं हुआ है। जिस संस्कार को मैंने रियलाइज़ किया कि यह ठीक है, वह देखना है सबको ठीक लगता है? यदि औरों को वह ठीक नहीं लगता तो उसे ठीक नहीं कहेंगे। हम देखते हैं यह मेरा संस्कार औरों को रुकावट डालता है तो समझना चाहिए इसको बदलना ज़रूरी है। अब उसको बदलने के लिए ज्ञान की शक्ति चाहिए। एक है अपने से रियलाइज़ करना, दूसरा है कि दूसरे हमको रिजल्ट में राइट समझना। अगर दूसरे रिजल्ट में राइट नहीं समझते हैं तो मैं उसको चेंज करूँ। इसको कहा जाता है रियलाइज़ करना।

हम कौन हैं? हम हैं ब्राह्मण। हम न इन्सान हैं, न देवता हैं। इन्सान में सहन करने की शक्ति नही है। निंदा–स्तुति, मान–अपमान सहन कर सकेंगे? नहीं। क्योंकि इन्सान अर्थात् देह–अभिमान वाले और देवताओं के लिए यह बात है ही नहीं। बात है अब हम ब्राह्मणों की। जैसे देखो, हम कइयों को कहते हैं कि ज्ञान के बिना कोई यह नहीं सोचता कि काम विकार को वृत्ति से ही जीतना है। हम कहते हैं वृत्ति में भी यह संकल्प न उठे क्योंकि देवताओं में यह वृत्ति नहीं है। हम मनुष्य से देवता बनते हैं तो हमारा यह संस्कार पूर्ण रूप से परिवर्तन हुआ ना! बाबा ने युक्ति दी कि ज्ञान सहित भाई–भाई की दृष्टि से देखो तो वृत्ति बदल जायेगी। तो इन्सान संस्कार को पलटाकर देवताई संस्कार बनायें ना।

अब बाबा हम बच्चों को बहुत सूक्ष्म ले जाता है। बाबा कहते, बच्चे, किसी भी प्रकार की आप में अटैचमेंट नहीं चाहिए। ब्रह्मा में भी न हो। तो जैसे बाबा एकदम देह की अटैचमेंट से हम बच्चों को परे ले जाते हैं। देहधारी का सहारा भी नहीं। हम कहते कारोबार में तो एक–दो का सहारा तो चाहिए ना, परन्तु नहीं। बाबा कहते, बच्चे, इनसे भी परे। क्योंकि बाबा जानते हैं आत्मा देह में है तो उनका यह संस्कार है। तो बाबा हमें उनसे भी ऊँचा ले जाते कि बच्चे सहरा एक शिव बाबा का। तो देखो बाबा हमारा यह संस्कार भी बदल देते हैं ना कि किसी भी प्रकार से कोई देहधारी की याद न आये। एक शिव बाबा के सिवाय किसी की भी याद न रहे।

अभी हमें यह नहीं समझना चाहिए कि मैं पुरुषार्थी हूँ। मैं तो मा0 सम्पूर्णता के सागर हूँ। मैं तो अब समय के समीप पहुँची हूँ/पहुँचा हूँ। फ़रिश्ता स्वरूप मेरे सामने खड़ा है। बाबा हमें उस सीट पर देखना चाहता है।

अच्छा ओम् शांति।

03. दादी जी के महावाक्य

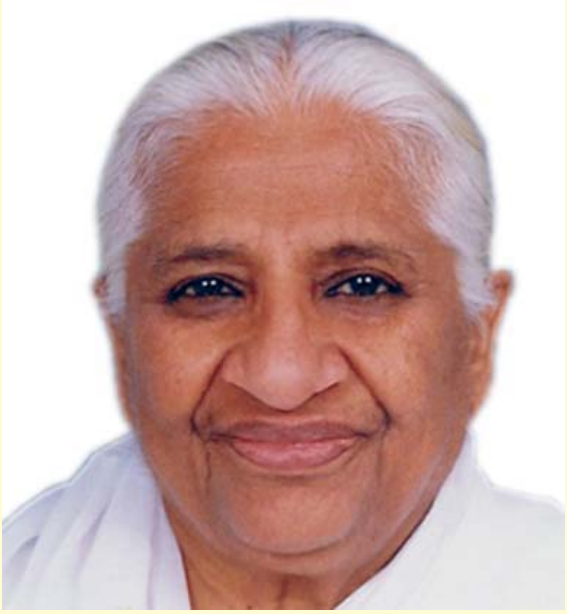

हम ब्राह्मणों का आहार–विहार है सबका सुनना, सबका समाना, सबका सहन करना और सबको स्नेह देना। सबको सहन कराना, यह हमारा आहार नहीं है। सहन करना सीखो, सहन कराना नहीं। दृढ़ संकल्प करो। ऐसे नहीं, क्या करें, धारणा नहीं होती। हम निर्बल नहीं, हम तो महा बलवान बच्चे हैं।

हमें दुआओं का हार चाहिए। यही फूलों का हार है। जो यह हार पहनता है वही बाबा के गले का हार है। मुझे स्नेह की शक्ति सदा साथ रखनी है, वैर की नहीं प्यार के सागर के प्यार में भरे हुए हम रत्न हैं। प्यार को छोड़कर हमें मटके नहीं सुखाने हैं। जहाँ प्यार है, वहाँ मटके भर जाते हैं। जहाँ वैर है, वहाँ भरे हुए मटके भी सूख जाते हैं।

बाबा ने हम ब्राह्मणों के लिए जो विधि–विधान बनायें हैं उनको सदा कायम रखना है। दृढ़ संकल्प करो तो पुरानी बातें सब समाप्त हो जायेंगी। जहाँ संकल्प दृढ़ है वहाँ सब बातों में विजय है। हरेक अपनी प्रवृत्ति को मिनी मधुबन बनाओ। मधुबन जैसी दिनचर्या बनाओ। ऐसा अपना वातावरण बनाओ।

बाबा कहता है परचिंतन परतन की जड़ है। मुझे सदा स्व–चिंतन में, स्व–धर्म में रहना है। हम किसी की चिंताओं से चिंतित क्यों हो? चिंताओं की चिता क्यों बनायें?

अगर ज्ञान में आने से कोई आपको रोकता है तो ऐसा रहमदिल नहीं बनो कि उसके कहने से रुक जाओ। लेकिन उसके प्रति भी शुभ भावना रहे कि यह आज नहीं तो कल बाबा का बन ही जायेगा। दया का मतलब है कि मुझे अपने पुराने संस्कारों के वश किसको दर्द नहीं देना है। हम सब दुःख–दर्द हरने वाली देवियाँ हैं/देव हैं। हमें हारना नहीं है, हराना है। यह पाठ पक्का हो तो सबके प्रति प्रेम की, दया की स्नेह की भावना रहेगी। स्नेह के सागर में डूबे हुए हीरे–मोती रहेंगे। नफ़रत नहीं आयेगी। दया करने से उनका कल्याण होगा, नफ़रत से नहीं। हम रहमदिल बाप के रहमदिल बच्चे हैं इसलिए नफ़रत कर नहीं सकते।

आप सब देव और देवी हो। आपकी दया ही बाबा की दया है। आप देवों की हमें दया चाहिए। इन देवों की दया हो तो मैं राजाओं का राजा बनूँ। देव बना ही तब है जब सब देवों ने दया की है। हमें सर्व के स्नेह की, आशीर्वाद की दृष्टि मिलती रहे। यही मेरा पुरुषार्थ है।

अच्छा, ओम् शांति।

04. दादी जी के महावाक्य

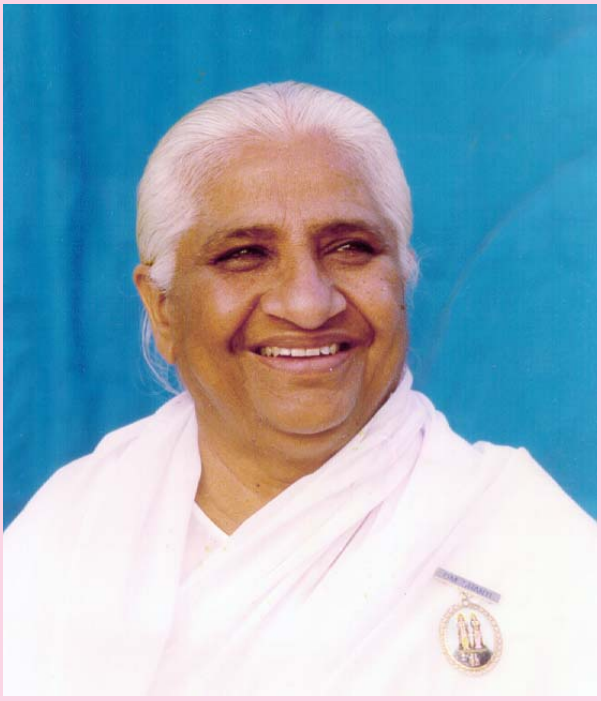

जब मैं सवेरे उठ बाबा की याद में बैठती हूँ तो चैक करती हूँ कि वरदाता बाप की वरदानी मूर्त आत्मा हूँ। हमें इन्हीं घड़ियों में बाबा से अनेक दुआयें ले अपने भंडार को भरना है। बाबा दुआओं से मेरे भंडार भरता है। मैं ऐसा कोई कर्म क्यों करूँ जो मेरी मिली हुई दुआयें बद्दुआ हो जायें। मुझे यह संकल्प सदा साथ रहता है कि मुझे दुआओं से अपनी झोली भरनी है। एक–एक मुझे दुआयें दे, मैं दुआओं को भरकर बाबा के घर जाऊँ। आपकी दुआयें बाबा की दुआयें हैं। मुझे हर सेकण्ड आपसे दुआओं का भंडार लेना है। मुझे दुआ लेनी है, दुआ देनी है, किसी की बद्दुआ नहीं लेनी है। यही पुरुषार्थ का बहुत अच्छा साधन है। सदा यह संकल्प रहे कि हमें सर्व की दुआयें लेनी है तो संकल्प, वृत्ति, वाचा सब सफल हो जायेंगे। मेरी एक घड़ी भी असफल हुई माना बद्दुआ; सफलता माना दुआ। यह बहुत ऊँचा पुरुषार्थ है।

हम शीतल योगी हैं। योगी की काया, दृष्टि, वृत्ति, बोल सब शीतल होगा। शीतलता ही हमारे जीवन का मीठा वरदान है। बच्चों को कंट्रोल करना यह हमारा फ़र्ज है लेकिन ताम्बे की तरह लाल–पीला होना यह हमारा फ़र्ज नहीं। अपनी ड्युटी का एडवान्टेज पुराने संस्कारों के अनुकूल नहीं करना है।

कई कहते हैं मेरे को जितनी ख़ुशी होनी चाहिए वह नहीं है। मैं उनसे पूछती हूँ बाबा मिला सबकुछ मिला, बाबा मिला राज्यभाग्य मिला, बाबा से सर्व वरदान मिले, फिर हमें कौन-सी ऐसी वस्तु चाहिए जिसके कारण ख़ुशी नहीं होती? फिर कई कहते हैं ग़मी भी नहीं है, ख़ुशी भी नहीं है। तो ज़रूर बीच में कोई चारे है इसलिए ख़ुशी नहीं। हमारा आधार है बाबा, हमने 'बाबा' अक्षर ही पढ़ा है, इसी बिन्दु में सबकुछ आ जाता है फिर मुझे ख़ुशी क्यों नहीं?

हम प्यार के सागर के पले हुए प्यारे बच्चे हैं। हम सब बाबा को कहते, बाबा, हमने इस बेहद की पुरानी दुनिया का संन्यास किया है, हम संन्यासी हैं, वैरागी हैं। हमें अब नयी दुनिया में जाना है। हम देवता थे फिर हमें देवता बनना है, यह भी हमें निश्चय है। सफलता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, विजय हमारी हुई पड़ी है। भल कितने भी विघ्न पड़ें लेकिन सफलता या विजय हमारी हुई पड़ी है।

अच्छा, ओम् शांति।

05. दादी जी के महावाक्य

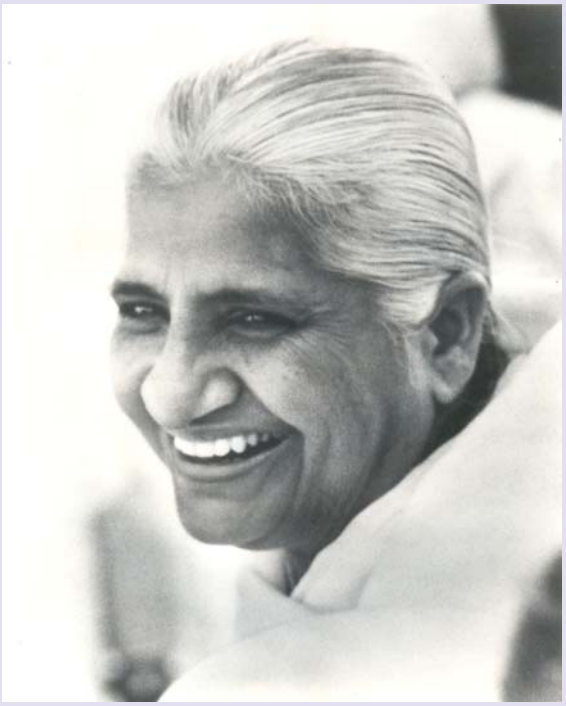

हम सब राजयोगी हैं। लेकिन योग का अंतिम चरण लाना है। इतना अपने को योगी बनाना है जो लगे कि योग भी हामारा कितना सुन्दर प्यारा सब्जेक्ट है। न तेरा, न मेरा, न ये, न वो; कुछ भी नहीं हो। ऐसा लगे सचमुच हम परमधाम घर में हैं। अब हमें जाना ही है उस घर में। घर जाना है यह आँखों में बसना चाहिए। यह याद रहे। मेरा वर्तमान यह पुरुषार्थ है, लक्ष्य है। इसी पर पूरा ध्यान है।

हम सबको वर्तमान समय यह स्थिति बिलकुल पॉवरफुल बनानी है। इसमें सब शक्तियाँ आ जायेंगी। रूहरिहान करो, प्वइंट्स निकालो यह अच्छी बात है लेकिन प्वाइंट रूप बनने का बहुत ध्यान रखना है। तब ही स्वयं को स्वयं से संतुष्टता होती है। यह है योग की सिद्धि। इसका नाम है राजयोग। स्वयं हरेक दिल से यह कहे कि मैं कितना साइलेंस के टॉवर पर रहता हूँ जहाँ कुछ नहीं है।

स्वयं की शक्ति का स्टोर करने के लिए यह मेहनत ज़रूर करनी है। यह है वर्तमान का लक्ष्य, पुरुषार्थ, अनुभव। यह गुप्त मेहनत हम सब गुप्त पुरुषार्थियों को करना है।

वर्तमान समय हम बच्चों की पढ़ाई मनसा की है। सूक्ष्म संकल्प, सूक्ष्म दृष्टि व वृत्ति की पढ़ाई है। दृष्टि–वृत्ति इतनी महीन चीज़ हैं जिनको पवित्र बनाना है जिससे ही वायुमंडल बनता है। वाचा और कर्मणा तो मोटी चीज़ है, हमारी कोई मंत्र पढ़ने व जपने की पढ़ाई नहीं है लेकिन निरन्तर मन्मनाभव रहने की पढ़ाई है।

अब निरन्तर योगी कैसे बनें? सर्व बीमारियों की दवा है निरन्तर योग। जितना–जितना अपनी स्थिति अशरीरी बनाते जायेंगे उतना हमें जीवन के सर्व पहलुओं का हल मिल जायेगा।

बाबा ने लक्ष्य दिया है कि तुम अपने चार्ट में देखो कि मैं निरहंकारी कहाँ तक बना हूँ/बनी हूँ? वह तब होगा जब देह का भान न हो। निर्मानता से निरहंकारी बनते, दिलों को जीत लेते लेकिन इससे भी ऊपर है देह का भी भान न हो। हमें इन सबसे ऊपर जाना है।

अच्छा, ओम् शांति।

06. दादी जी के महावाक्य

बाप से प्यार सभी का है लेकिन बाप समान बनना माना जैसे शिव बाप निराकार है और ब्रह्मा बाप ने भी अपने को आकारी से निराकारी बनाया ऐसे हम भी फॉलो कर समान बनें। इसके लिए एकान्त में विशेष टाइम देकर निराकारी स्थिति में रहने का अभयास करने की ज़रूरत है।

कई कहते हैं हम तो बाबा के हो गये, हमको तो बाबा सदा ही याद है लेकिन यह कोई याद की यात्रा नहीं है। हो गये, यह नशा ठीक है पर याद की यात्रा में रहने के लिए हमें विशेष सूक्ष्म से सूक्ष्म अपनी बीजरूप स्थिति में रहने की मेहनत करनी है।

बीजरूप स्थिति माना जिसमें कोई दूसरे संकल्प–विकल्प न हों। अशरीरी हो जायें। एकदम सूक्ष्म निराकारी बन जायें। बीज में सब समाया रहता है।

योग में भिन्न–भिन्न पुरुषार्थ करते हैं कि बाबा से रूहरिहान करें, मनन–चिंतन करें, यह भी अच्छी बात है लेकिन साथ–साथ अपनी ऊँची स्थिति बनाने का लक्ष्य रखना है जो खुद को यह अनुभव हो कि बाबा के याद की इतनी मुझे शक्ति है जो इस याद में रहने से मेरे 63 जन्मों के विकर्मों का खाता क्लीयर, क्लीन हो रहा है।

अपना चार्ट देखो कि मैं कर्मातीत स्थिति के कितने समीप हूँ? आज मैं इसे चोले को बदलूँ तो मुझ आत्मा का कितना क्लीयर और क्लीन हिसाब है या अभी तक कोई दाग है? दाग होगा तो कर्मातीत कैसे बनेंगे? हमें अपनी स्थिति का चार्ट चैक करना है कि कौन–सा दाग अभी रहा हुआ है?

जब समय की गति इतनी तेज जा रही है तो समय की गति अनुसार हमारे पुरुषार्थ की गति भी इतनी तेज जा रही है? इस स्थिति में रहने से जो पुराने संस्कार हैं, कमियाँ हैं वह सहज परिवर्तन हो जाते हैं।

अच्छा, ओम् शांति।

07. दादी जी के महावाक्य

वर्तमान समय सभी का पुरुषार्थ है हम बाप समान फ़रिश्ता बनें, अव्यक्त बनें। एंजिल्स सभी को बहुत प्यारे लगते हैं। सभी अनुभव करते हैं कि साकारी से आकारी स्थिति बनने में, एंजिल्स बनने में, उस लक्ष्य को धारण करने में कितना सुंदर अनुभव होता है! एंजिल्स की स्थिति कितनी मीठी होती है! साक्षात्कार में भी सभी को विशेष एंजिल्स का अनुभव होता है।

लेकिन हमें आकारी स्थिति में साथ–साथ निराकारी स्थिति का भी विशेष अनुभव करना है। क्योंकि बाप निराकार है, आत्मा निराकार है और हम सबको जाना भी निराकारी दुनिया में है। स्वीट होम को साइलेन्स होम भी कहते हैं वहाँ से ही विष्णुपुरी का गेट खुलता है। आकारी दुनिया से हम वाया होने वाले हैं। परन्तु वाया होंगे भी तब जब संपूर्ण पवित्र बनेंगे। तो एंजिल्स माना ही कम्पलीट प्युअर। कम्पलीट प्युअर बनकर ही शांतिधाम जाना है और विद् ऑनर जाना है।

हम सबकी बुद्धि में यह लक्ष्य है कि हमें ऐसी स्थिति में जाना है जो कोई सज़ा न खानी पड़े। बाबा ने भी कहा है कि लक्ष्य रखो तो लक्षण आयेंगे। लक्ष्य ही है हमें बाबा के समान बन, बाबा के पास बाबा के घर जाना है। हम सब आत्माओं का स्वीट होम वही है।

कई बार कहते हैं कि शांति की गहरी अनुभूति हो। साइलेन्स इज़ पॉवर कहते हैं। तो यह साइलेन्स की अनुभूति, साइलेन्स की पॉवर तब अनुभव होगी जब हमारी यह प्रैक्टिस रहेगी कि हम आत्मा बिन्दु हैं। जितना–जितना हम अपने को निराकारी आत्मा समझेंगे उतना देह का भान मिटता जायेगा। यह देह का भाान बहुत मोटा है। एक है देह का अभिमान रखना, एक है देह का भान रखना। तो न देह के अभिमान में रहना है, न देह का भान में आना है। इन दोनों से अपने को मुक्त कर लेता है। इसका नाम है राजयोग।

न अहम् का अहंकार चाहिए, न अहम् का अभिमान चाहिए, न अहम् का नशा चाहिए। इस अभिमान से, इस अहंकार से खुद को बहुत–बहुत दूर निरहंकारी बनाना है। निरहंकारी बनने का साधन ही है खुद को निराकारी बनाओ। निराकारी स्थिति में जाने से निरहंकारी, निरहंकारी से निर्विकारी बनेंगे।

अच्छा, ओम् शांति।

08. दादी जी के महावाक्य

दिल हमेशा रीयल रखो जिसको ट्रूथ कहते हैं। जितना ट्रूथफुल रहेंगे उतना ही लव, रिस्पेक्ट प्राप्त करेंगे।

कहा ही जाता है गॉड इज़ ट्रूथ, ट्रूथ इज़ गॉड। जितना ट्रूथफुल रहेंगे उतना सबके दिलों पर विजय प्राप्त करेंगे। सच्चाई ही एक साधन है सबके दिलों पर विजय प्राप्त करने का।

सच्चाई अपने दिल को बहुत आराम देती है। कहते हैं आज के ज़माने में जो सच्चा रहता है उसको ही सुनना पड़ता है लेकिन मैं इस बात को नहीं मानती हूँ। हम सच्चे हैं तो डरें क्यों? सच्चाई के धर्म को क्यों छोड़ें।

सच्चाई माना धर्म। सच्चे हैं तो धर्म पर हैं। दूसरे के दिलों को जीतना हो तो ट्रूथफुल, पीसफुल, लवफुल बनो। जितना ट्रूथफुल बनेंगे, उतना निर्भय रहेंगे, किसी का डर नहीं रहेगा। नहीं तो मनुष्य एक–दूसरे से डरता रहता है। ज़रूरत नहीं है डरने की।

जितना हो सके सर्व के प्रति हारमनी अर्थात् सद्भावना रखें। हमारी यह सद्भावना है कि विश्व स्वर्ग बने।

जैसे ख़ुशी में डांस करते हैं ऐसे सदा ख़ुशी की डांस करते रहो। डांस एक–दूसरे को ख़ुश करती है। डांस वा एक्टिंग इसीलिए करते हैं ताकि दूसरे भी ख़ुशी में आयें। जीवन भी इतना सुन्दर प्रैक्टिकल डांस हो कि दूसरे भी देख ख़ुशी में उड़ते रहें। तो जहाँ भी रहो ख़ुश रहो। जीवन में ख़ुशी सदैव अमर रहे।

इस ज्ञान–योग का फल ही है एवर हेपी रहना। यह जीवन से कभी ख़त्म न हो। एवर हेपी रहने से एवर पीस में भी रहेंगे। हमें पीसफुल रहना है क्योंकि बाप हमारा सुप्रीम फादर पीसफुल है। कभी चेहरे में अशांति के भाव न आयें और न ही टेंशन, वरी, हरी के लिए कोई स्थान हो।

ओम् शांति।

09. दादी जी के महावाक्य

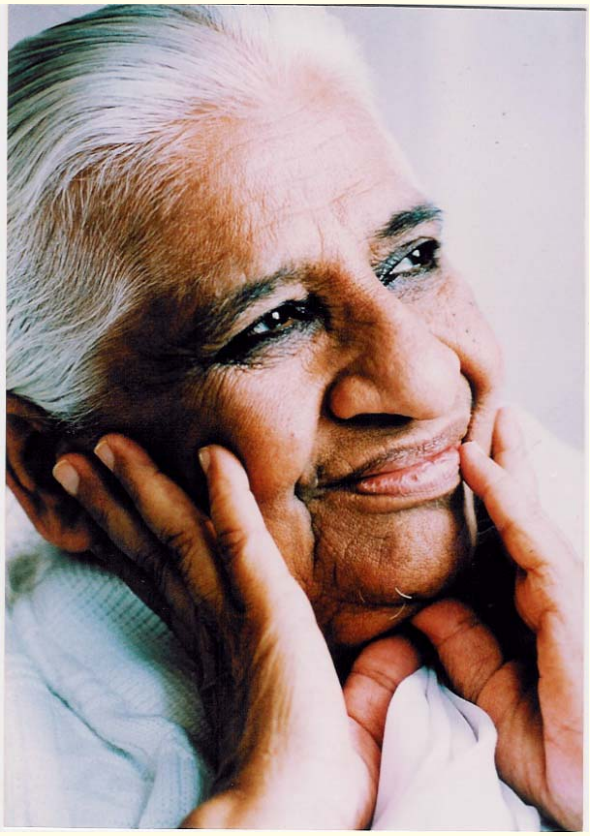

इतना बड़ा यज्ञ है, कॉन्फ्रेन्स होतीं, सेवायें होतीं; लोग पूछते दादी आपको कोई टेंशन होता है? मैं कहती हूँः नहीं,कोई टेंशन नहीं होता। नो टेंशन, नो वरी। एवर हेपी, एवर पीसफुल।

बाबा ने इतनी बड़ी बुद्धि दी, इतना बड़ा परिवार दिया, इतनी बड़ी युनिवर्सिटी दी, इतना बड़ा विश्व दिया है, इतना सारी सृष्टि का खेल देखते। अब किसी बात की वरी करूँ? किस बात का टेंशन करूँ? किस का टेंशन करूँ?

चलो कोई चीज़ रखी है, टूट गई; अब टूट गयी तो टूट गयी, टेंशन क्यों करें? किसी का हार्ट फेल हो गया तो हो गया; मैं क्यों टेंशन करूँ? किसी का एक्सीडेंट हो गया तो किसी ने जानबूझ कर तो नहीं किया है ना! उसका टेंशन क्यों करें?

कोई छोटा–मोटा नुकसान करेंगे तो कई इतना गुस्सा करेंगे जैसे गुस्सा करने से नुकसान पूरा हो जायेगा। उस वृत्ति से, न आँख से देखना है, न मुख से बोलना है, न कर्म में आना है तो सदैव बहुत अच्छे उड़ते रहेंगे। बाबा ज्ञान–योग के पंख देकर हमें उड़ाते हैं।

यह ज्ञान और योग हमें सभी बातों का प्रैक्टिकल अर्थ सिखाता है। इसीलिए हम कहेंगे कि सदैव समझो हम गॉडली स्टूडेंट हैं, हमें सीखना ही है। न हम बड़े हैं, न कोई बड़ा है। बड़े से बड़ा तो बस बाबा है। हम सब उनके स्टूडेंट हैं।

बाबा गुणों का भंडार है, देवतायें सर्वगुण संपन्न हैं। हमें बाप समान बनना है तो हमें इतने गुण धारण करने हैं। सभ्यता से चलना, यह भी बहुत बड़ा गुण है। सभ्यता वाले मधुर बोलेंगे, धीरे चलेंगे। काम करेंगे तो बहुत प्यार से, देखेंगे तो भी सम्मान से। सभ्यता लव सिखाती, रिस्पेक्ट देना सिखाती, मधुरता सिखाती है। हर बात में सभ्यता की दरकार है। यह है श्रेष्ठ मेनर्स हैं। सभ्यता वाले के पास इगो नहीं आता।

अच्छा, ओम् शांति।

10. दादी जी के महावाक्य

हमें उन्नति की राह पर चलना है। जितनी हम अपनी उन्नति को प्राप्त करें, जितनी आध्यात्मिक शक्ति की ऊँचाई पर जायें उतना थोड़ा है। जितना हो सके अपने को निरहंकारी बनाना है। जितना हम निरहंकारी बनेंगे उतना सब बातों में सफल बनेंगे। अगर सब बातों में सफलता लानी है तो इगो को छोड़ना होगा।

जहाँ तक जीना है वहाँ तक सीखना ही सीखना है। बाबा की मुरली से हम रोज़ सीखते हैं।

भले कोई किसी भाव से हमें देखें लेकिन ज्ञान कहता है तुम सबका सत्कार करो। तिरस्कार क्यों करते हो? तुम जितना दूसरों को रिस्पेक्ट देंगे उतनी रिस्पेक्ट पायेंगे। योग सिखाता है तुम सबका सम्मान करो, रिस्पेक्ट दो। रिस्पेक्ट देने से ही लव मिलेगा। लव और रिस्पेक्ट ये दो पंख हैं जो सदा उड़ने का अनुभव कराते हैं।

जैसे आत्मा लाइट है ऐसे व्यवहार में भी लाइट रहो तो डबल लाइट हो जायेंगे। डबल लाइट माना ही एवर रेडी।

कई समझते हैं लाइफ में अकेलापन लगता है। अरे, आये अकेले, जाना अकेले तो ये अकेलापन कैसा? इतनी सारी विश्व की आत्माओं की स्टेज पर रहते हैं तो अकेले कैसा? स्टेज कितनी बड़ी है! यह दुनिया के ड्रामा का खेल देखो। अकेला क्यों?

इतनी बड़ी दुनिया की फिल्म चल रही है वह देखो। दूसरी बात अकेले रहने में तो बहुत मजा है। एकान्तप्रिय हो जाओ। कभी–कभी पहाड़ों पर जाते हैं तो लगता है यहाँ बड़ी शांति हैं शांति को तो सब प्यार करते हैं तो अकेले में ही तो शांति है। फिर अकेलापन क्यों फील होता है?

जो समझते हैं मैं अकेला हूँ शायद उनको शांति चाहिए ही नहीं। क्योंकि जहाँ भी दो होंगे वहाँ कुछ न कुछ चूँ–चूँ होगी। इसलिए अकेला ही तो प्रिय है।

जब आत्मा और परमात्मा दो हैं तो अकेले तो हुए ही नहीं। बाकी तो अपना परिवार है, दैवी परिवार है, सब एक–दूसरे के साथ हैं ही।

ओम् शांति।

11. दादी जी के महावाक्य

श्रेष्ठ कर्म के लिए सबसे पहले चाहिए दैवीगुणों की धारणा। देवीगुणों की धारणा में कमी आने का मूल कारण है इगा (अहंकार)। अनुभव कहता है भले, ज्ञान बहुत सुन लो, योग बहुत अच्छा लगाओ, बाबा को प्यार करो परन्तु अगर अन्दर में इगो है तो वह सब बातों को ढक देगा, नुकसान कर देगा।

सबसे पहले हमने देखा कि पिताश्री जिनके पास नालेज की इतनी बड़ी अथॉर्टी थी, इतनी हम बच्चों से मेहनत करते, समझते लेकिन मैंने कभी उनके व्यवहार में इगो देखा नहीं। इगो अभिमान पैदा करता है। ईर्ष्या भी पैदा करता है क्योंकि देह–अभिमान से इगो आता, नशा चढ़ता।

हमें कभी इगो इगो न आये उसकी अनेक युक्तियाँ बाबा ने बताई हैं। पहले तो हमारी बुद्धि में रहता इस ज्ञान की पढ़ाई में मैं सदैव स्टूडेंट हूँ। जितना हम पढ़ाई करें उतनी थोड़ी है।

सदा मैं बुद्धि में रखती हूँ कि हर बात में मुझे परफेक्ट होना है। तो कौन किस बात में परफेक्ट है, वह मुझे देखना है। हर एक से मैं विशेषता उठाती हूँ। ऐसा नहीं सोचती हूँ कि यह ऐसा है, वैसा है। मैं यह नहीं सोचती मैं दादी हूँ। हम सदैव स्टूडेंट हैं। कोई का कैसा भी व्यवहार है, चलन है, दृष्टि–वृत्ति है, हमें उनसे अच्छा सीखना है।

बाप शिक्षक है पर हम हर एक से शिक्षा लें तो हमारी दृष्टि ऐसी रहती जिससे न खुद इगो आता, न कभी किसी के लिए नफ़रत आती है।

बाबा कहते कभी किसी को बुरे भाव से नहीं देखो। बुराई सबमें हैं, तुम बुराई नहीं देखो, अच्छाई देखो। न बुराई को बुद्धि में लाओ।

यह नालेज और योग हमको श्रेष्ठता, अच्छाई वा ऊँचाई लेना सिखाता है। श्रेष्ठता लाना ही गाडली स्टूडेंट बनना है।

ओम् शांति।

12. दादी जी के महावाक्य

बाबा ने हमको देना सिखाया है, लेना नहीं सिखाया है। लेना बाप से है, शांति बाप से लो लेकिन दूसरों को दो। दूसरे से लेना हो तो उनमें जो अच्छाई है वो लो। फिर दूसरे से जो कर्मों का खाता बनता है, वह नहीं बनेगा। नहीं तो उल्टा कर्मों का खाता बनेगा। फिर कभी बहुत मौज रहेगी, ख़ुशी रहेगी, कभी थोड़े में ख़ुश हो जायेंगे, कभी थोड़े में दुःखी हो जायेंगे, तो ख़ुशी हमारी प्रापर्टी हुई क्या?

यदि आप किसी कारण से अपनी ख़ुशी गँवाते हैं तो यह मिलियन डॉलर गँवाते हैं। दुनिया में तो कई बातें आयेंगी, जायेंगी। यह सब होना ही है लेकिन हमें राजयोग सीखकर जीवन में बैलेन्स लाना है।

कर्म भी करो तो उसके फल की जास्ती इच्छा नहीं रखो। करते चलो, करते चलो। दूसरों को भी मौज देते चलो, ख़ुशी देते चलो। तो आप भी मौज में रहेंगे। ख़ुशी देना कोई डॉलर खर्च करना नहीं है। लेकिन ख़ुशी पैसे, डॉलर, रुपयों से बहुत बड़ा अमूल्य रत्न है। बाबा ने हमें ख़ुशी दी है।

जिसके पास थोड़ा भी इगो रहता, वह न खुद ख़ुश रहता है, न दूसरों को ख़ुश करता है। वो सदैव नाख़ुश रहेगा। किसी न किसी बात में डिस्टर्ब होता रहेगा। इगो से ख़ुशी खत्म हो जाती है। तो यह राजयोग हमें बहुत बड़ी सूक्ष्म ख़ुशी देता है। हम सिर्फ हेपी नहीं, वेरी–वेरी हेपी हैं। ये है ज्ञान–योग का फल।

हर एक ऐसे समझो कि मैं आकाश में उड़ रहा हूँ/ उड़ रही हूँ। इतनी ख़ुशी में रहो। क्यों? कौन मिला है हमें! यह तो हमारे पास ज्ञान है। बाबा कहते मैं तुम्हें डबल वर्सा देने आता हूँः ब्रह्मांड और विश्व दोनों का। और हमें क्या चाहिए! कुछ नहीं। अगर थोड़ी भी किसी प्रकार की इच्छा होगी तो वह ख़ुशी गायब करेगी।

ओम् शांति।

13. दादी जी के महावाक्य

यह बेहद की युनिवर्सिटी में पढ़ाने वाला प्रोफेसर, सुप्रीम टीचर परमात्मा है। भले यह प्यारे सुप्रीम फादर का घर भी है परन्तु साथ–साथ युनिवर्सिटी भी है तो आप सभी इस समय गॉडली स्टूडेंट बनकर सुप्रीम टीचर द्वारा इस ज्ञान–योग की पढ़ाई पढ़ रहे हो।

इस पढ़ाई से लाइफ के लिए सच्ची राह मिला जाती है, जिस राह से रूह को राहत मिलती है। ये नॉलेज हमें राइट और रॉंग की बुद्धि देती है। दिव्यबुद्धि अर्थात् जो राइट और रॉंग की जजमेंट करे। आज मनुष्य की बुद्धि राइट और रॉंग की जजमेंट करने में असमर्थ हैं। अपनी–अपनी मत से एक कहेगा ये राइट, दूसरा कहेगा कि ये राइट...। राइट को रॉंग कर देते, रॉंग को राइट कर देते हैं। लेकिन ये नॉलेज जो वास्तविक सत्य है, उसी सत्यता का फौरन जजमेंट देती है। कैसा भी कर्म करते हैं, कैसी भी चाल–चलन कोई चले, राइट–रॉंग की जजमेंट मिलती है। जैसे हंस खीर और नीर दोनों को अलग कर लेता। रत्न चुग लेता है, कंकड़ छोड़ देता है। तो यह नॉलेज हमको हंस बनाती है। राइट–रॉंग की यथार्थ पहचान देती है। दृष्टि–वृत्ति में स्वयं को और औरों को फील होता है कि यह जिस दृष्टि से देखता है वह रूहानियत से देखता है, प्रेम से देखता है, सद्भावना से देखता है या इसकी दृष्टि–वृत्ति कैसी है? यदि अपवित्रता की दृष्टि होगी तो भी अन्दर रियलाइज़ होगा। यदि किसी के लिए नफ़रत होगी तो भी उसकी दृष्टि से मालूम हो जायेगा कि यह किस दृष्टि से मुझे देखता है। चाहे किसी के लिए दिल में अन्दर कोई फीलिंग होगी तो भी उसके चेहरे से दिखाई पड़ जायेगा।

हमको नॉलेज मिली है कि तुम आत्मा इस मस्तक पर मणि की तरह चमकती हुई बिन्दु हो। तुम उस मणि अर्थात् बिन्दु को ही देखो और उस बिन्दु में कितने विशेष गुण हैं, कितनी उसमें रूहानियत की शक्ति है, वही देखो। क्योंकि कोई भी बात पहले बुद्धि में आती फिर वृत्ति में चली जाती है। तो वह वृत्ति फिर दृष्टि से काम करेगी। तो यह वृत्ति और दृष्टि दूसरों को कितना प्रेम देती, रिस्पेक्ट देती, दूसरों के प्रति कितनी सद्भावना देती! यह सब नॉलेज से रियलाइज़ हो जाता है।

(सम्मेलन में आये हुए मेहमानों को संबोधन करते)

ओम् शांति।

14. दादी जी के महावाक्य

बाबा कहते, मेरे में कोई तमन्ना नहीं है। परन्तु सेवार्थ वा दूसरों के कल्याणार्थ बापदादा अपने बच्चों को अपने समान देखना चाहते हैं। बाबा की जो महिमा वा टाइटल है, उन सबके आगे बाबा ने हम बच्चों को मास्टर शब्द दिया है। खुद नॉलेजफुल है, सर्वशक्तिवान है, प्यार का सागर है तो हमें भी सबमें मास्टर बनाया हैं परन्तु इस बात में कभी नहीं कहा कि ''मैं विश्व का मालिक हूँ, तुम मास्टर विश्व के मालिक हो।'' हमें डायरेक्ट कहा कि तुम सभी देवी–देवता बनते हो। देवी–देवता का अर्थ ही है, सम्पन्न बनना। विश्व का मालिक खुद नहीं बनता, वह हमें बनाता है। वह तो हमारा भविष्य है परन्तु सम्पन्न स्थिति हमारी संगम की है।

सम्पन्न स्थिति का सैम्पल हमारा मीठा बाबा है जिसने हमें हर बात में सम्पन्न बनकर दिखाया। उसने हमें मास्टर नहीं कहा लेकिन कहा, जैसा मैं बनता वैसे तुम बनो। उस बाबा ने हमें काँटों से कली, कली से फूल बनाया है। साकार बाप ने कदम–कदम श्रीमत पर चलकर दिखाया। हमारे सम्पन्न बनने में अभी कितना परसेन्ट देरी है?

साकार में कहा मैं सेवाधारी हूँ, मैं निमित्त हूँ। ऐसे ही तुम बच्चे भी सेवाधारी हो, निमित्त हो। हम निमित्त बने हुए बच्चे खुद से पूछते हैं कि हम क्या करते हैं! बाबा हम बच्चों को सिखलाने के लिए याद का चार्ट रखता। बाबा कहता, मैं भी याद का पुरुषार्थ करता हूँ। बाबा कहता, मैं भी पुरुषार्थी हूँ, सम्पन्न बनेंगे तो कर्मातीत हो जायेंगे। हम कहते, बाबा आप तो उसके साथ बैठे हैं।

जब बाबा भी कहता, मैं याद के चार्ट पर इतना अटेंशन देता हूँ तो हम भी देखें कि हमारा चार्ट इतना ही अन्दर गहरा जा रहा है? हमारी अन्दरूनी योग की स्थिति बहुत मीठी गहरी होती जाती है? यही हमारा आदि–मध्य–अन्त का पुरुषार्थ है।

ओम् शांति।

15. दादी जी के महावाक्य

ज्ञान सुनाना तो सहज है, परन्तु ज्ञान के साथ–साथ जो निरन्तर योग की स्थिति चाहिए वह हमारे नयनों में कहाँ तक रहती, जो हमारी दृष्टि से दूसरे निहाल हो सकें। मेरे पुरुषार्थ का यही संकल्प है।

अमृतवेले आँख खुलती, रात को सोते, यह सवाल हमारी दिनचर्या में अनेक बार आता हमें अपनी नज़रों से सर्व आत्माओं को प्यारे बाबा की याद की छाप ऐसी देनी है जो वह निहाल हो जायें।

बाबा कहते, तुम्हें नज़र से निहाल करना है। निहाल करने वाला तो बाबा है, हम तो निमित्त हैं परन्तु बाबा हमारी स्थिति महान्, रूहानी, अशरीरी बनाने के लिए कहते, जिससे जो आत्मायें आयें वह निहाल हो जायें। निहाल कहो, संतुष्ट कहो या कहो अपनी झोली वरदानों से भरकर जायें।

वरदाता बाप ने हमें वरदानी बनाया है। यह संगमयुग वरदानों से झोली भरने का है। अमृतवेला वरदान प्राप्त करने का समय है। ब्राह्मण बच्चों को ही डायरेक्ट वरदान लेने का सौभाग्य है। एक तरफ वरदान लेने का सौभाग्य है दूसरे तरफ देने का हमारा कर्तव्य है। मैं वरदानी हूँ या मुझे वरदान प्राप्त हैह्नमेरा इसी पर मनन होता है। फिर रेसपांड आता कि सर्व वरदान मैंने कहाँ तक प्राप्त किये हैं जो सर्व वरदान दूसरों को भी प्राप्त करा सकें। अगर यही समय मेरे वरदान लेने की लॉटरी का है तो मैं पूरे वरदान लेती जा रही हूँ? मेरा कम्पलीट कनेक्शन बाबा के साथ जुटा है या नीचे आ जाती?

अपनी चैकिंग करने से इतनी मीठी मस्ती रहती, चाहे जो भी कार्य हो रहा हो परन्तु अनेक कार्य व्यवहार से बुद्धि परे हो जाती। हरेक अपने से पूछे, मैं कोई वरदान में मिस तो नहीं हूँ? मैं अपना पूरा–पूरा अधिकार ले रही हूँ/ले रहा हूँ?

बाबा कहते, तुम्हें मेरे से सारी शक्तियों का वरदान लेना है। मैं अगर किसी शक्ति में कमज़ोर हूँ तो मैं पूछूँह्नमेरे में यह शक्ति कम क्यों? मैं अपनी शक्ति कम क्यों रखूँ!

ओम् शांति।

16. दादी जी के महावाक्य

हमें बाबा ने कहा, तुम हो विश्वकल्याणी और हम कहें, हमने तो फलाने संस्कार का त्याग नहीं किया है। अपने संस्कार का ही उद्धार नहीं किया तो दूसरे का क्या करूँगी? बाबा ने कहा, तुम उद्धारमूर्त हो। उद्धार माना ही हमारे में कोई पुरानी वृत्ति–दृष्टि न हो। तो मैंने संस्कारों का उद्धार किया?

जब कोई कहता यह पुराना संस्कार है तो मन में आता, यह भाषा हमारी समाप्त कब होगी? हम कभी वर्णन करेंगे क्या कि श्रीकृष्ण का यह संस्कार है। संस्कार शब्द अपनी डिक्शनरी का नहीं। तो पहले हम संस्कार शब्द का ही त्याग करें। कोई कहता इनका तो पुराना कड़ा संस्कार है, यह तो मेरी इन्सल्ट हुई, ग्लानि हुई। मेरे में कोई भी संस्कार की आदत है तो मैं आदत के वश हुई। आदत मेरे वश कब होगी? आदत वश में हो गयी माना संस्कार परिवर्तन हो गये। संस्कार परिवर्तन माना संकल्प–विकल्प खत्म।

संस्कार के वश हैं तो उनकी बुद्धि के अन्दर अनेकानेक व्यर्थ संकल्प चलते हैं, संकल्प व्यर्थ हैं तो शक्ति की वेस्टेज है। शक्ति वेस्ट करते तो वरदानों से झोली खाली हो जाती।

बाबा कहते, तुम किसी के पास जाओ, यह ज्ञान तुम्हें कोई दे नहीं सकता। हमारे सामने कितने भी पढ़े–लिखे हों कुछ भी नहीं हैं। हम सिर्फ अल्फ बे पढ़े हैं लेकिन उनसे महान् हैं क्योंकि उन्हें वरदाता का वरदान नहीं है। वे कोई देवताई संस्कार में परिवर्तन नहीं हो रहे हैं। वह कर्मातीत नहीं बन रहे हैं। हम बच्चों को सबकुछ मिलता, उन्हें कुछ भी नहीं। जब हमें ही वरदान मिल रहे हैं तो हम अपने संकल्प को व्यर्थ क्यों करते?

बाबा घड़ी–घड़ी कहता, बच्चे संकल्प व्यर्थ नहीं गँवओ तो मैं क्यों गँवऊँ? उस खर्चे का पिंच होता परन्तु अपने संकल्प व्यर्थ करते उसका सोच नहीं चलता? पैसे का सोच होता लेकिन मैं बाबा की मिली हुई शक्ति व्यर्थ करता उसका शॉक नहीं आता?

ओम् शांति।

17. दादी जी के महावाक्य

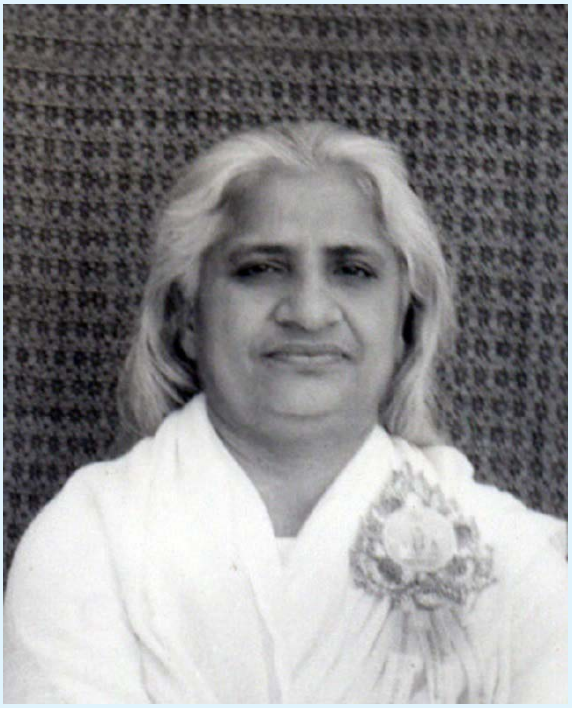

हम सब साइलेंस में बैठते हैं। हमारी साइलेंस में यह शुभ भावनायें भरी हुई हैं कि विश्व की आत्माओं को शांति प्रदान हो, सुख–शांति वाली दुनिया बनें। याद की यात्रा में सूक्ष्म आवाज़ से परे, संकल्पों से भी परे रहने का सहज अनुभव होता है। जैसे बाबा कहते, बच्चे इस शरीर का भान भी न रहे। इसका ही हरेक को अभ्यास व पुरुषार्थ करना है। यही हमारी आत्मा की अथवा बुद्धि की खुराक है और इससे ही हम अपनी संपन्न स्थिति को पहुँचेंगे। इस सूक्ष्म अभ्यास को हमें बढ़ाते जाना है तभी हम अपनी अंतिम स्थिति को पा सकेंगे। बापदादा भी हमें तत्त्वम् का वरदान देते हैं। हम सबकी बुद्धि में है कि हमें बाप के समान बनना है। तो जितना बाबा ऊँच है उतना हम उनके समान ऊँच बने हैं? यह रोज़ अपने आप में देखते रहो तो स्वतः ही बाप की सर्वशक्तियों का स्वयं में अनुभव होगा।

जैसे बाबा इन आवाज़ों से परे रहे, हमें भी उन जेसे आवाज़ से परे रहना चाहिए। जितना हम आवाज़ों से परे होते जायेंगे उतना हमारी बुद्धि एक बाबा में सहज निरन्तर टिकी रहेगी। स्व की स्थिति सर्व संकल्पों–विकल्पों से तभी परे रह सकती है जब सर्व प्रकार की रसनायें, सर्व संबंधों का सुख एक बाबा से लें। इसके लिए हमें अनेकानेक आवाज़ों से बुद्धि को परे ले जाना है। अगर आवाज़ों से परे नहीं जाते तो यह आवाज़ ही हमें अहम्–वहम् में ले जाती है।

इस समय अंतःवाहक स्थिति का अनुभव हम सबको करना है तो यह अनुभव तभी होगा जब हम सब बातों से परे अर्थात् लाइट रहें। फ़रिश्ता अर्थात् सब प्रकार से लाइट। अगर हम सब बातों से परे नहीं रहते तो स्थिति नीचे आ जाती है।

इस समय सूक्ष्म अहम्–वहम् बहुत है। यही अहम् हरेक की स्थिति को नीचे ले आता है। यह अहम् जब समाप्त हो तब फ़रिश्ता बनें। अहम् की परसेन्टेज हरेक स्वयं में अनुभव करता है। क्योंकि यही सूक्ष्म अहम् बुद्धि को प्युअर, सतोगुणी बनने नहीं देता, उसमें परसेन्टेज हो जाती है। अहम् का भाव होने से जो सूक्ष्म इमप्युअर संकल्प उठते हैं वह बायबेशन में जाते हैं। जब हमारी बुद्धि इस सूक्ष्म अहम्–वहम् के संस्कारों से ऊपर निकल जाती है तो वृत्ति ऐसी बन जाती जैसे कि हम फ़रिश्ता हैं।

ओम् शांति।

17. दादी जी के महावाक्य

मैं तो सदैव इस संगम समय का गुण गाती। भाग्यविधाता ने संगम की यह अमूल्य घड़ियाँ दी हैं, जिन घड़ियों में बाबा हमें प्युअर डायमंड बनाता। जब हम प्युअर डायमंड हैं तो फिर यह क्यों सोचते कि अभी तक फ्ला है। फिर डायमंड का मजा कब लेंगे? डायमंड का वैल्यू अभी है, उसका सुख अभी लेना है।

अभी ही कर्मातीत स्थिति का अनुभव करना है। अंत में थोड़े ही कर सकेंगे? उसकी रिजल्ट का फल तो अब खाना है। अंत में तो उड़ जायेंगे। क्या उड़ने के बाद उसका अनुभव वर्णन करेंगे? कर्मातीत अवस्था का आनंद अगर शरीर छोड़ने समय अनुभव में आयेगा तो उसका वर्णन कब और कैसे करूँगी? कोई पूछे इस स्थिति का अनुभव क्या है, तो क्या हम उसको यह कहें कि जब शरीर छोड़ूँ तब पूछना?

मैं सदा उसी तख्त पर रहूँ जैसे मैं आज ही कर्मातीत हूँ, कल नहीं होऊँगी। उड़ने के बाद तो मैं सुनाऊँगी नहीं कि मैं कितनी ऊँच स्थिति पर हूँ। उससे तो मैं क्यों वह फल अभी खाऊँ। इसके लिए मैं आत्मा इतनी संपन्न रहूँ जो सर्व संबंधों, सर्व गुणों का, सर्व कलाओं का फल रोज़ खा सकूँ। हमें तो उस स्थिति का बहुत मजा आता।

उस स्थिति में कोई चिंता नहीं। अहम्–वहम् नहीं। सब बातों से परे, आवाज़ से परे अपनी स्थिति शांति की शैया पर निरंतर रहती। इसलिए न कोई हलचल है, न कोई बात। मैं तो ट्रांसपरेंट फ़रिश्ता हूँ। अन्दर–बाहर साफ–स्वच्छ हूँ। बाबा ने मुझे आप समान बनने का वरदान दिया है। बाबा कहे, तू फ़रिश्ता हो, फिर मैं क्यों कहूँ आप ऊँचे हो मैं नीची हूँ।

जब मैं किसी के चेहरों पर हलचल देखती तो मुझे आश्चर्य लगता। तेरी–मेरी अनेक बातें दिमाग में भरकर अपनी बुद्धि की शक्ति व्यर्थ क्यों गँवाते? बाबा हमारी बुद्धि में सर्व रसनायें भरता और हम अपनी बुद्धि को उससे कट कर नीचे ले आते। तो क्या यह बाबा की अवज्ञा नहीं है? यह मनमत नहीं है? मैं क्यों मनमत के संकल्प करूँ?

ओम् शांति।

19. दादी जी के महावाक्य

सुखदाता ने हमें अनेक वरदान दे दिये हैं, फिर हम प्रकृति के धर्म में आकर रावण का श्राप क्यों लें? जिस घड़ी हमने ईश्वरीय जन्म लिया उसी घड़ी हम मर्यादाओं के सूत्र में, सेवा के सूत्र में, नयी दुनिया में चलने के सूत्र में बँध गये। बाबा ने नये राज्य का ताज–तख्त देने का सूत्र बाँध दिया।

जन्मपत्री, जन्मते ही एक बार बनती, फिर थोड़े ही बनती? मिटाने वाले ने सबकुछ मिटा दिया, देने वाले ने सबकुछ दे दिया, इसी स्थिति में सदा रहो तो कभी कोई चिंता, परचिंतन, अहम्–वहम् नहीं होगा। सब समाप्त हो जायेगा।

पांडवों को, महावीरों को सभी शक्तियों की रक्षा करनी है। पांडवों को बाबा ने रक्षक बनाया है। रक्षक कभी भक्षक नहीं होते। ऐसा समझो हम सभी बाबा के इस बेहद यज्ञ के रक्षक हैं। फिर जो असुरों के विघ्न आते हैं उनसे रक्षा हो जायेगी। ड्रामा के लास्ट में भी जैसे अनेक सीरियस सीनरी आती, ऐसे यहाँ भी अनेक असुरों के विघ्न आते हैं। उन सबको आप महावीर पांडवों को अपने योग की स्थिति से समाप्त कर रक्षक बनना है। इस समय दुनिया में कीचक बहुत हैं। छोटी–छोटी बच्चियों को बाबा ने सीट दी है, उनकी संभाल करनी है, तभी हम सब विघ्नों से पार हो घर चलेंगे।

देवताओं को इशारा ही बहुत है। इसलिए अब वह समय गुजर गया, बचपन की बातें, हँसी–मजाक, खेलकूद, रूसना इनसे ऊपर जाना है। गुड़ियों का खेल अब समाप्त करो।

बाबा ने हमें कर्म, अकर्म, विकर्म की गति समझायी है। अब विकर्म और कर्म का खाता समाप्त। अब हम अकर्म की लाइन में आ रहे हैं। जब हमारे सब खाते चुक्तू हों तब हम उड़ें। अब हम अकर्मी की स्टेज पर खुद को देखें तो सतयुग की दुनिया में चले जायेंगे। अब कोई लेन–देन का, पाप–पुण्य का खाता भी नहीं। बाबा ने हमें सभी पुण्यों का वर्सा दिया है। ऐसा नहीं कि अब हमें कोई पुण्य का खाता बनाना है। अब तो कर्मातीत स्थिति का अनुभव करना है, तभी बहुत मजा आयेगा। अब सब खाते समाप्त करो।

ओम् शांति।

20. दादी जी के महावाक्य

अब हम ब्राह्मणों की वह अवस्था चाहिए कि 'पाना था जो पा लिया...।' जब हम इस स्थिति में पहुँच जाते हैं तो माँगना समाप्त हो जाता है। बाप से बच्चों को माँगने की दरकार नहीं रहती। वह आपे ही देता है। बाबा कई बार हम बच्चों को अमृतवेले का रमणीक दृश्य सुनाते कि सवेरे–सवेरे बच्चे बाप से क्या माँगते हैं, क्या–क्या उलहनें देते हैं। अगर साक्षी होकर देखो तो आपको भी मजा आयेगा। साथ–साथ बाबा यह भी कहते, बच्चे तुम्हें जो भी प्राप्ति करनी है, जिस भी संबंध का रस लेना है वह अमृतवेले बाप से ले सकते हो, क्योंकि उस समय बाप भोलानाथ के रूप में होते हैं। यह किन के लिए कहा? जिन बच्चों को बाबा देखता यह तृप्त नहीं है तो बुद्धि औरों में न जाये इसलिए कहता मेरे से ही लो। लेकिन माँगना ब्राह्मणों का धर्म नहीं। यह तो भक्ति के संस्कार है।

अगर आप धरनी पर खड़े हो बाबा को आकाश से ऊपर देखते तो सवाल आता हम नीचे हैं, आप ऊपर हैं। हम आपके पास कैसे पहुँचे! परन्तु जब बुद्धि धरनी से ही ऊपर चली जाती है तो ऊपर जायेगी ही बाबा के पास। जब साथ बैठे होंगे तो आकाश में उड़ने वाले धरनी की चीजें क्या माँगेंगे? धरनी वाले शक्ति माँगते, लाइट माँगते, मदद माँगते...। बाबा के बोल हैं, बच्चे, तुम मेरे से माँगते क्यों हो? कहा जाता है सहज मिले सो दूध बराबर...। जब स्वयं ज्ञान सागर बाप हमें क्षीर की दुनिया में ले चलता है फिर उस ऊँचे से ऊँच बाप को मनुष्य क्यों बुलाते हो?

जब कोई तबीयत के कारण या कोई कमी के कारण डिस्टर्ब होकर कहते हैं, हे बाबा, ओ बाबा... तो बाबा के महावाक्य हैं तुम तो भगवान के बच्चे हो। तुम्हारे मुख से कभी भी हाय–हाय नहीं निकल सकता। बाप हम बच्चों के यह हाय–हाय के बोल सुन नहीं सकते। जब बाप और ड्रामा में निश्चय है तो फिर हाय–हाय के बोल मुख से क्यों निकलते हैं? हे बाबा, कहना भी हमारी पुकार के बोल हैं। पुकार का बोल भक्ति का, प्रार्थना का, माँगने का है। यह शक्तिहीन शब्द है। बाबा ने हमारे सब पुराने संस्कार मिटाये हैं इसलिए बाबा को यह शब्द पसन्द नहीं हैं।

ओम् शांति।

21. दादी जी के महावाक्य

आज बाबा ने कहा, तुम बच्चों की एकमत होनी चाहिए क्योंकि यहाँ के एकमत के संस्कार आधा कल्प तक चलने हैं। एक श्रीमत के संस्कार जो अभी हम भर रहे हैं इन्हीं संस्कारों के आधार पर 21 जन्म तक कोई की भी मत व राय लेने की दरकार नहीं रहती। तो हम सब एक श्रीमत पर चलने वाले हैं। हमारी एक श्रीमत 21 पीढ़ी तक चलनी है। यह हमारा फाउण्डेशन है।

एक है कार्य–व्यवहार में एकमत रहना और दूसरा है स्वस्थिति में। कई बार कार्य–व्यवहार में ही भिन्न–भिन्न मतें तो हो जाती हैं, फिर स्थिति बिगड़ती है। तो पहले अपने से पूछना है कि पहली सब्जेक्ट क्या है? स्वस्थिति वा सेवा? कार्य में अगर स्वस्थिति खत्म हो जाती है तो क्या उसमें सफलता मिलेगी?

बाबा कहते, तुम्हारे में अगर योग का जौहर नहीं है तो तीर नहीं लग सकता। तो जब हम सेवा करने जाते हैं उस समय अगर हमारी स्वस्थिति नहीं तो हम सेवा क्या करेंगे! उसमें शक्ति क्या मिलेगी! जब हम सबकी पहले एकमत होगी तो एक के शुद्ध वायब्रेशन का सहयोग मिलेगा। एक–एक की शक्ति मिलकर 11 हो जायेगी। अगर हम पहले ही आपस में डिस्टर्ब हो गये, फिर सेवा करने निकले तो उसकी सफलता क्या?

इसलिए कभी भी अपने मन को खराब न करो। अगर मन खराब हुआ तो पार्टीबाजी होगी, दुश्मनी बनेगी, डिस्ट्रक्टिव काम होगा। इसमें नम्रता गुण चाहिए।

जब भी कोई ऐसी बात हो तो सरेण्डर हो जाओ अर्थात् मोल्ड हो जाओ। एक ने कही, दूसरे ने मानी, उसका नाम है ज्ञानी। इसलिए अगर हम एक–दो की बात मानकर चलेंगे तो मानना अर्थात् मोल्ड होना, हाँ जी करना। अगर राय है तो प्रेम से, शांति से सुनायी जाये। सुनाने में हर्जा नहीं लेकिन मालिक बनकर सुनाओ, फिर बालक बन जाओ। मोल्ड की शक्ति ज़रूर हो।

ओम् शांति।

पुष्पाञ्जली

(25-8-2007)

माँ तुझे प्रणाम,

माँ, यज्ञवत्स हम सब मधुबनवासियों को आपकी याद बहुत आती है, भूलना चाहने पर भी भूल नहीं पाते हैं।

माँ आपका वो मातृप्रेम, पितृस्नेह, मित्रवत् अधिकार हमें परमपिता, परम शिक्षक, परम सद्गुरु शिव पिता की और समस्त मनुष्य-कुल का पितामह ब्रह्मा पिता की याद दिलाते हैं। सर्व के प्रति आपकी वह निःस्वार्थ पालना, रूहानी प्यार भरी दृष्टि, सबको अपना बनाने की कला, यज्ञ स्थापक शिव पिता के प्रति आपका अगाध प्रेम, यज्ञ के प्रति समर्पित भाव, यज्ञरक्षक ब्रह्मा पिता के प्रति आपका आज्ञाकारी और वफ़ादारी और ब्राह्मण कुलभूषणों के प्रति आपका विश्वास और ममता
हम सब के लिए आदर्श है, पथप्रदर्शक है और प्रकाशस्तम्भ है।